दिनांक–21.02.2025 UG Third Semester MJC (Philosophy)

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.1. जैन दर्शन के अनुसार अहिंसा का क्या महत्त्व है?

जैन दर्शन में अहिंसा का सर्वोच्च महत्त्व है और इसे जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है 'हिंसा न करना'। जैन दर्शन में यह सिद्धांत न केवल शारीरिक हिंसा से बचने के लिए है, बल्कि मानसिक और वाचिक हिंसा से भी बचने के लिए है। अहिंसा का पालन करने का अर्थ है किसी भी जीवित प्राणी को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। जैन धर्म के अनुयायी इस सिद्धांत का पालन करते हुए न केवल मनुष्यों, बल्कि सभी जीव–जंतुओं और यहाँ तक कि सूक्ष्म जीवों के प्रति भी करुणा और सम्मान का भाव रखते हैं। अहिंसा का पालन जीवन के सभी पहलुओं में किया जाता है, जैसे आहार, वाणी और कर्मों में।

Q. 2 .जैन दर्शन में अनेकांतवाद का क्या अर्थ है और इसका क्या महत्त्व है?

अनेकांतवाद जैन दर्शन का एक प्रमुख सिद्धांत है, जिसका अर्थ है 'अनेक दृष्टिकोण'। यह सिद्धांत यह बताता है कि किसी भी वस्तु या घटना को एक ही दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता है, बल्कि उसके विभिन्न पहलुओं और दृष्टिकोणों को भी समझना आवश्यक है। अनेकांतवाद के अनुसार, सत्य और वास्तविकता जटिल और बहुआयामी होते हैं, जिन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा और समझा जा सकता है। यह सिद्धांत जैन धर्म के सहिष्णुता, विनम्रता और तटस्थता के मूल्य को प्रोत्साहित करता है और हमें दूसरों के विचारों और विश्वासों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com